31/07/2020

PHILOSOPHY (Sub)

Ajeet Kumar
Assistant Professor
C.M.J College, Domwari hat.

Ethics

लोकसंग्रह

भगवद्गीता मानवकल्याण हेतु विकसित एक लोकप्रिय विचारधारा है, गीता के मुख्य उपदेश के विषय में गीता के भाष्यकारों में मतभेद है। तथापि इसके सभी भाष्यकार इस विषय में एकमत हैं कि गीता का मुख्य लक्ष्य है - ईश्वरलाभ या आत्मसाक्षात्कार और लोकसंग्रह। इनमें से प्रथम व्यक्ति स्वार्थ एवं परार्थ के सर्वोत्तम समन्वय पर बल देती है। गीता में इस चराचर जगत को ईश्वर की कृति माना जाता है। इसमें शाश्वत नैतिक व्यवस्था को स्वीकार किया जाता है। गीता प्रत्येक व्यक्ति से यह आग्रह करती है कि वह जगत की शाश्वत नैतिक व्यवस्था को सुदृढ़ करे जिससे लोकसंग्रह या लोककल्याण में कोई व्यवधान न हो। तात्पर्य यह है कि जहाँ एक ओर गीता तत्वमीमांसीय एवं आचार मीमांसीय सिद्धांत को प्रतिपादन करती है वहीं

दूसरी ओर सामाजिक व्यवस्था के सिद्धांत का भी प्रतिपादन करती है यह सामाजिक आदर्श के रूप में लोकसंग्रह के सिद्धांत को प्रस्तावित करती है और इसके साधन के रूप में स्वधर्म के सिद्धांत का विधान करती है

गीता लोकसंग्रह या सामाजिक कल्याण को मूर्त रूप देने के लिए कर्मप्रवृत्ति की अनिवार्यता पर बल देती है। उसकी स्पष्ट मान्यता है कि यह सारा लोक कर्म बन्धन में बंधा है, ~~प्रकृति~~ प्रकृति के सत्वरजोगुण सब प्राणियों को विवश करके कर्म कराते हैं। देहधारी प्राणी के लिए कर्मों का सर्वथा त्याग सम्भव नहीं है पुनः कोई भी व्यक्ति ऐसा ~~नहीं~~ नर अपने कर्मों का परित्याग नहीं करता रह सकता। इस प्रकार गीता ~~की~~ व्यक्ति के स्वामित्व के लिए व्यक्ति को कर्मसंन्यास से रोकती है और कर्म में प्रवृत्त होने की अपेक्षा करती है।